

धर्मामृत अनगार(फोल्डर नं. ०१०१५)
सम्पादन-अनुवाद – सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तावना

विषय सूची

प्रथम अध्याय

सिद्धोंको नमस्कार -----	१
प्रसंग वश सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक् चारित्रकी चर्चा -----	२-५
अर्हन्तको नमस्कार -----	७
दिव्यध्वनिकी चर्चा -----	८
गणधर देवादिका स्मरण -----	९
जिनागमके व्याख्याता आरातीय आचार्योंका स्मरण -----	१०
धर्मोपदेशका अभिनन्दन -----	११
धर्मामृतके रचनेकी प्रतिज्ञा -----	१३
प्रसंगवश मंगल आदिकी चर्चा -----	१४
सच्चे धर्मपदेशकों की दुर्लभता -----	१६
धर्मोपदेशक आचार्यके सद्गुण -----	१७
निकट भव्य श्रोताओंकी दुर्लभता -----	२०
अभव्य उपदेशका पात्र नहीं -----	२२
ऐसा गुण विशिष्ट भव्य ही उपदेशका पात्र -----	२३
सदुपदेशके बिना भव्यकी भी मति धर्ममें नहीं लगती -----	२४
चार प्रकारके श्रोता -----	२५
विनयका फल -----	२५
व्युत्पन्न उपदेशका पात्र नहीं -----	२६
विपर्ययग्रस्त भी उपदेशका पात्र नहीं -----	२६
धर्मका फल -----	२७
धर्ममें अनुरागहेतुक पुण्य बन्ध भी उपचारसे धर्म है -----	२८
धर्मका मुख्यफल -----	३०
पुण्यकी प्रशंसा -----	३१
इन्द्रपद, चक्रिपद, कामदेवत्व, आहारक शरीर आदि पुण्योदयसे प्राप्त होते हैं -----	३२-४१
गर्भादि कल्याणक सम्यक्त्व सहचारी पुण्यविशेषसे होते हैं -----	४४
धर्म दुःखको दूर करता है -----	४५
सगर, मेघवाहन और रामभद्रका दृष्टान्त -----	४६

धर्म नरकमें भी घोर उपसर्गको दूर करता है -----	४७
पाप कर्मके उदयमें भी धर्म ही उपकारी है -----	४८
दृष्टान्त द्वारा पुण्यके उपकार और पापके अपकारका समर्थन -----	४९
प्रद्युम्नका दृष्टान्त -----	५०
पुण्य पापमें बलाबल विचार -----	५१
२२ श्लोकों द्वारा मनुष्य भवकी निस्सारताका कथन -----	५२-५७
मनुष्य पर्याय बुरी होनेपर भी धर्मका अङ्ग है -----	६०
धर्म विमुखका तिरस्कार -----	६२
धर्म शब्दका अर्थ -----	६२
निश्चय रत्नत्रयका लक्षण -----	६४
सम्पूर्ण रत्नत्रय मोक्षका ही मार्ग -----	६६
मोक्षका उपाय बन्धनका उपाय नहीं हो सकता -----	६७
व्यवहार रत्नत्रयका लक्षण -----	६८
सम्यग्दर्शन आदिके मूल -----	७१
निश्चय निरपेक्ष व्यवहारनयका उपयोग स्वार्थका नाशक -----	७२
व्यवहारके बिना निश्चय भी व्यर्थ -----	७३
व्यवहार और निश्चयका लक्षण -----	७४
शुद्ध और अशुद्ध निश्चयका स्वरूप -----	७६
सद्भूत और असद्भूत व्यवहारका लक्षण -----	७७
अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नयका कथन -----	७७
उपचरित असद्भूत व्यवहारनयका कथन -----	७८
नयोंको सम्यक्पना और मिथ्यापना -----	७९
एक देशमें विशुद्धि और एक देशमें संक्लेशका फल -----	८०
अभेद समाधिकी महिमा -----	८२
द्वितीय अध्याय	
सम्यग्दर्शनको भी मुक्तिके लिये चारित्रकी अपेक्षा करनी पड़ती है -----	८४
मिथ्यात्वका लक्षण -----	८६
मिथ्यात्वके भेद और उसके प्रणेता -----	८७
एकान्त और विनयमिथ्यात्वकी निन्दा -----	८९
विपरीत और संशय मिथ्यात्वकी निन्दा -----	९०
अज्ञान मिथ्यादृष्टियोंके दुष्कृत्य -----	९१
प्रकारान्तरसे मिथ्यात्वके भेद-----	९२
३६३ मतोंका विवरण -----	९३-९५
मिथ्यात्वका विनाश करनेवालेकी प्रशंसा -----	९६
मिथ्यात्व और सम्यक्त्वका लक्षण-----	९७

सम्यक्त्वकी सामग्री -----	९९
परम आसका लक्षण -----	१००
आसकी सेवाकी प्रेरणा -----	१०१
आसका निर्णय कैसे करें -----	१०३
आस और अनासके द्वारा कहे वाक्योंका लक्षण -----	१०५
आसके वचनमें युक्तिसे बाधा आनेका परिहार -----	१०५
रागी आस नहीं -----	१०६
आसाभासोंकी उपेक्षा करो -----	१०७
मिथ्यात्वपर विय कैसे -----	१०९
जीवादि पदार्थोंका युक्तिसे समर्थन -----	११२
जीवपदार्थका विशेष कथन -----	१२१
सर्वथा नित्यता और सर्वथा क्षणिकतामें दोष -----	१२२
अमूर्त आत्माके भी कर्मबन्ध-----	१२४
आत्माके मूर्त होनेमें युक्ति -----	१२५
कर्मके मूर्त होनेमें प्रमाण -----	१२६
जीव शरीर प्रमाण -----	१२६
प्रत्येक शरीरमें भिन्न जीव -----	१२७
चार्वाकका खण्डन -----	१२७
चेतनाका स्वरूप -----	१२८
किन जीवोंके कौन चेतना -----	१२९
आस्रव तत्त्व -----	१३१
भावास्रवके भेद -----	१३३
बन्धका स्वरूप -----	१३५
बन्धके भेदोंका स्वरूप -----	१३७
पुण्यपाप पदार्थका निर्णय -----	१३९
संवरका स्वरूप और भेद -----	१४०
निर्जराका स्वरूप -----	१४०
निर्जराका भेद -----	१४१
मोक्षतत्त्वका लक्षण -----	१४२
मुक्तात्माका स्वरूप -----	१४४
सम्यक्त्वकी सामग्री-----	१४५
पाँच लब्धियाँ -----	१४७
निसर्ग अधिगमका स्वरूप-----	१४९
सम्यक्त्वके भेद -----	१५१
प्रशम आदिका लक्षण -----	१५३

सम्यक्त्वके सद्भावके निर्णयका उपाय -----	१५४
औपशमिक सम्यक्त्व और क्षायिक सम्यक्त्वका अन्तरंग कारण -----	१५४
वेदक सम्यक्त्वका अन्तरंग कारण -----	१५५
वेदककी अगाढता, मालिन्य तथा चलत्वका कथन -----	१५६
आज्ञा सम्यक्त्व आदिका स्वरूप -----	१५७
आज्ञा सम्यक्त्वके उपाय -----	१५८
सम्यग्दर्शनकी महिमा -----	१५८
सम्यक्त्वके अनुग्रहसे ही पुण्य भी कार्यकारी -----	१६२
सम्यग्दर्शन साक्षात् मोक्षका कारण -----	१६३
सम्यक्त्वकी आराधनाका उपाय -----	१६५
सम्यक्त्वके अतीचार -----	१६६
शंकाका लक्षण -----	१६६
शंकासे हानि -----	१६८
कांक्षा अतिचार -----	१६९
कांक्षा करनेवालोंके सम्यक्त्वके फलमें हानि -----	१७१
कांक्षा करना निष्फल -----	१७१
आकांक्षाको रोकनेका प्रयत्न करो -----	१७२
विचिकित्सा अतिचार -----	१७२
अपने शरीरमें विचिकित्सा न करनेका माहात्म्य -----	१७२
विचिकित्साके त्यागका प्रयत्न करो -----	१७३
परदृष्टि प्रशंसा नामक सम्यक्त्वका मूल -----	१७४
रअनायतन सेवाका निषेध -----	१७४
मिथ्यात्व सेवनका निषेध -----	१७५
मदरूपी मिथ्यात्वका निषेध -----	१७५
जातिमद कुलमदका निषेध -----	१७६
सौन्दर्यके मदके दोष -----	१७७
लक्ष्मीके मदका निषेध -----	१७७
शिल्पकला आदिके ज्ञानका मद करनेका निषेध -----	१७८
बलके मदका निषेध -----	१७९
तपका मद दुर्जय है -----	१७९
पूजाके मदके दोष -----	१८०
सात प्रकारके मिथ्यादृष्टि त्यागने योग्य -----	१८०
जैन मिथ्यादृष्टि लभी त्याज्य -----	१८१
मिथ्याज्ञानियोंसे सम्पर्क निषेध -----	१८२
मिथ्याचारित्र नामक अनायतनका निषेध -----	१८३

हिंसा-अहिंसा माहात्म्य -----	१८४
तीन मूढताका त्याग सम्यग्दृष्टिका भूषण -----	१८४
उपगूहन आदि न करनेवाले सम्यक्त्वके वैरी -----	१८६
उपगूहन गुणका पालन करो -----	१८७
स्थितिकरण गुणका पालन करो -----	१८८
वात्सल्य गुणका पालन करो -----	१८८
प्रभावना गुणका पालन करो -----	१८९
विनय गुण का पालन करो -----	१९०
प्राकारान्तरसे सम्यक्त्वकी विनय -----	१९३
अष्टांगपुष्ट सम्यक्त्वका फल -----	१९३
क्षायिक तथा अन्य सम्यक्त्वोंमें साध्य-साधन भाव -----	१९४
तृतीय अध्याय	
श्रुतकी आराधना करो -----	१९७
श्रुतकी आराधना परम्परासे केवलज्ञानमें हेतु -----	१९८
मति आदि ज्ञानोंकी उपयोगिता -----	२००
पाँचों ज्ञानोंका स्वरूप -----	२०२
श्रुतज्ञानकी सामग्री व स्वरूप-----	२०३
श्रुतज्ञानके बीस भेद -----	२०४
प्रथमानुयोग -----	२०८
करणानुयोग -----	२०९
चरणानुयोग -----	२१०
द्रव्यानुयोग -----	२१०
आठ प्रकारकी ज्ञानविनय -----	२११
ज्ञानके बिना तप सफल नहीं -----	२१२
ज्ञानकी दुर्लभता -----	२१४
मनका निग्रह करके स्वाध्याय करनेसे दुर्धर संयम भी सुखकर -----	२१५
स्वाध्यातपकी उत्कृष्टता -----	२१६
श्रुतज्ञानकी आराधना परम्परासे मुक्तिका कारण -----	२१६
चतुर्थ अध्याय	
चारित्राधनाकी प्रेरणा -----	२१७
चारित्रकी अपूर्णतामें मुक्ति नहीं -----	२१८
दया चारित्रका मूल -----	२१९
सदय और निर्दयमें अन्तर -----	२१९
दयालु और निर्दयका मुक्तिके लिए कष्ट उठाना व्यर्थ -----	२२०
विश्वासका मूल दया -----	२२०

एक बार भी अपकार किया हुआ बार-बार अपकार करता है -----	२२१
दयाकी रक्षाके लिए विषयोंको त्यागो -----	२२२
इन्द्रियाँ मनुष्यकी प्रज्ञा नष्ट कर देती हैं -----	२२३
विषयलम्पटकी दुर्गति -----	२२३
विषयोंसे निस्पृहकी इष्टसिद्धि -----	२२३
व्रतका लक्षण-----	२२४
व्रतकी महिमा -----	२२५
व्रतके भेद तथा स्वामी -----	२२६
हिंसा का लक्षण -----	२२६
दस प्राण-----	२२७
त्रसके भेद-----	२२७
द्रव्येन्द्रियोंके आकार -----	२२८
त्रसकोंका निवासस्थान -----	२२८
एकेन्द्रिय जीव -----	२२९
वनस्पतिके प्रकार -----	२३१
साधारण और प्रत्येककी पहचान -----	२३२
निगोतका लक्षण -----	२३२
निगोतके भेद -----	२३३
पृथ्वीकाय आदिके आकार -----	२३४
सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित -----	२३४
पर्याप्तक और अपर्याप्तकोंके प्राण -----	२३५
पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्तका स्वरूप -----	२३५
पर्याप्तिका स्वरूप और भेद -----	२३६
चौदह जीवसमास -----	२३६
चौदह गुणस्थान -----	२३७
चौदह मार्गणा -----	२३८
हिंसाका विस्तृत स्वरूप -----	२३८
प्रमाद ही हिंसक -----	२४०
प्रमादके भेद -----	२४०
समिति गुप्तिके पालकके बन्ध नहीं -----	२४१
रागादिकी उत्पत्ति ही हिंसा -----	२४२
एक सौ आठ कारणोंको दूर करनेपर ही अहिंसक -----	२४२
भावहिंसामें निमित्त परद्रव्यका त्याग आवश्यक -----	२४३
अजीवाधिकरणके भेद -----	२४३
हिंसाको दूर रहनेका उपदेश -----	२४६

घनश्री और मृगसेनाका उदाहरण -----	२४८
अहिंसा व्रतकी भावना -----	२४९
सत्यव्रतका स्वरूप -----	२५१
चार प्रकारका असत्य -----	२५२
चार प्रकारके असत्यके दोष -----	२५४
सत्यवचन सेवनीय -----	२५५
असत्यका लक्षण -----	२५६
मौनका उपदेश -----	२५७
सत्य व्रतकी भावना -----	२५८
सत्यवादी धनदेव और असत्यवादी वसुराजाका उदाहरण -----	२५८
दस प्रकारका सत्यत-----	२५९
नौ प्रकारका अनुभय वचन -----	२६१
अचौर्य व्रत -----	२६३
चोरसे माता-पिता भी दूर रहते हैं -----	२६४
चोरके दुःसह पापबन्ध -----	२६५
श्रीभूति और वारिषेणका उदाहरण-----	२६५
चोरीके अन्य दोष -----	२६६
विधिपूर्वक दी हुई वस्तु ग्राह्य -----	२६७
अचौर्यव्रतकी भावा -----	२६८
प्राकारन्तरसे भावना -----	२६९
ब्रह्मचर्यका स्वरूप -----	२७२
दस प्रकारके अब्रह्मका निषेध -----	२७३
विषय विकारकारी -----	२७४
मैथुन संज्ञा -----	२७५
विषयासक्त प्राणियोंके लिए शोक-----	२७६
कामके दस वेग -----	२७८
कामीको कुछ भी अकृत्य नहीं -----	२७९
कामाग्निका इलाज नहीं -----	२८०
मैथुन संज्ञाके निग्रहका उपाय -----	२८१
स्त्रीदोषोंका वर्णन -----	२८२
स्त्री संसर्गके दोष -----	२८५
कामान्धकी भावनाका तिरस्कार -----	२९३
वृद्ध पुरुषोंकी संगतिका उपदेश -----	२९५
वृद्धजनों और युवाजनोंकी संगतिमें अन्तर -----	२९५
तरुणोंकी संगति अविश्वसनीय -----	२९६

तरुण अवस्थामें भी अविकारीकी प्रशंसा -----	२९७
चारुदत्त और मारिदत्तका उदाहरण-----	२९७
ब्रह्मचर्य व्रतकी भावना -----	२९८
वीर्यवर्द्धक रसोंके सेवनका प्रभाव-----	२९८
ब्रह्मचर्यमें प्रमाद करनेवाले हँसीके पात्र -----	२९९
आकिंचन्य व्रत -----	३००
परिग्रहके दोष -----	३०१
चौदह अभ्यन्तर तथा दस बाह्य परिग्रह -----	३०२
परिग्रहत्यागकी विधि -----	३०३
परिग्रहीकी निन्दा-----	३०५
पुत्रके मोहमें अन्धजनोंकी निन्दा -----	३११
पुत्रीके मोहमें अन्धजनोंकी निन्दा -----	३१३
पिता-माताके प्रति तथा दास-दासीके प्रति अत्यधिक अनुरागकी निन्दा -----	३१४
चतुष्पद परिग्रहका निषेध -----	३१६
अचेतनसे चेतन परिग्रह अधिककष्टकर -----	३१७
क्षेत्रादि परिग्रहके दोष -----	३१९
धनकी ननिन्दा-----	३२१
परिग्रहसे संचित पापकर्मकी निर्जरा कठिन -----	३२४
मोहको जीतना कठिन -----	३२५
लक्ष्मीका त्याग करनेवालोंकी प्रशंसा -----	३२६
बाह्य परिग्रहमें शरीर सबसे अधिक हेय -----	३२७
परिग्रह त्याग करके भी शरीरमें मोहसे क्षति -----	३२८
भेदज्ञानी साधुकी प्रशंसा -----	३३०
अन्तरात्मामें ही उपयोग लगानेका उपदेश -----	३३२
आकिंचन्य व्रतकी भावना -----	३३४
पाँच महाव्रतोंके महत्त्वका समर्थन -----	३३५
रात्रिभोजनविरति छठा अणुव्रत -----	३३५
मैत्री आदि भावनाओंमें नियुक्त होनेकी प्रेरणा -----	३३९
आठ प्रवचनमाताओंकी आराधनापर जोर -----	३४४
गुप्ति सामान्यका लक्षण -----	३४४
मनोगुप्ति आदिके विशेष लक्षण -----	३४५
त्रिगुप्ति गुप्तके ही परम संवर -----	३४८
मनोगुप्ति और वचनगुप्तिके अतिचार -----	३४९
कायगुप्तिके अतिचार -----	३५०
पाँच समितियाँ -----	३५१

ईर्यासमितिका लक्षण -----	३५२
भाषासमितिका लक्षण -----	३५३
एषणासमितिका लक्षण -----	३५४
आदान निक्षेपण समिति -----	३५५
उत्सर्ग समितिका कथन -----	३५६
शीलका लक्षण और विशेषता -----	३५८
गुणोंका लक्षण और भेद -----	३६२
सम्यक्चारित्रका उद्योतन -----	३६४
चारित्रविनय -----	३६५
साधु बननेकी प्रक्रिया -----	३६७
चारित्रका उद्यमन -----	३६९
चारित्रका माहात्म्य -----	३७०
संयमके बिना तप सफल नहीं-----	३७४
तपका चारित्रमें अन्तर्भाव -----	३७५
पंचम अध्याय	
आठ पिण्ड शुद्धियाँ -----	३७७
उद्गम और उत्पादन दोष -----	३७८
अधःकर्म दोष -----	३७८
उद्गमके भेद -----	३७९
औद्देशिक दोष -----	३७९
साधिक दोष -----	३८०
पूति दोष -----	३८०
मिश्र दोष -----	३८२
प्राभृतक दोष -----	३८२
बलि और न्यस्त दोष -----	३८३
प्रादुष्कार और क्रीत दोष -----	३८४
प्रामित्य और परिवर्तित दोष -----	३८५
निषिद्ध दोष -----	३८६
अभिहत दोष -----	३८७
उद्भिन्न और अच्छेद्य दोष -----	३८७
मालारोहण दोष -----	३८८
उत्पादन दोष-----	३८८
धात्री दोष -----	३८९
दूत और निमित्त दोष -----	३८९
वनीपक और आजीव दोष -----	३९१

क्रोधादि दोष -----	३९२
पूर्वसंस्तव और पश्चात् संस्तव दोष -----	३९३
चिकित्सा, विद्या और मन्त्रदोष -----	३९३
चूर्ण और मूलकर्म दोष -----	३९४
अशन दोष -----	३९५
शंकित और पिहित दोष -----	३९५
मक्षित और निक्षपत दोष -----	३९६
छोटित दोष -----	३९६
अपरिणत दोष -----	३९७
साधारण दोष -----	३९७
दायक दोष -----	३९८
लिस दोष -----	३९९
वमिश्र दोष -----	४००
अंगार, धूम, संयोजमान दोष -----	४००
अतिमात्रक दोष -----	४०१
चौदह मल -----	४०२
मलोमें महा, मध्यम और अल्प दोष -----	४०२
बत्तीस अन्तराय -----	४०३
काक अन्तराय -----	४०३
अमेध्य, छर्दि और रोधन -----	४०४
रुधिर, अश्रुपात और जानु अधःपरामर्श -----	४०४
जानु परिव्यतिक्रम, नाभिअधोनिर्गमन अन्तराय -----	४०४
प्रत्याख्यान सेवन और जन्तुवध अन्तराय -----	४०४
काकादि पिण्डहरण आदि अन्तराय -----	४०५
भाजनसंपात और उच्चार -----	४०५
प्रसवण और अभोज्य गृहप्रवेश -----	४०५
पतन, उपवेशन, सन्देश -----	४०६
भूमिसंस्पर्श आदि अन्तराय -----	४०६
प्रहार, ग्रामहाद आदि -----	४०६
शेष अन्तराय -----	४०७
मुनि आहार क्यों करते हैं -----	४०८
भूखेके दया आदि नहीं -----	४०८
भोजन त्यागके निमित्त -----	४०९
विचारपूर्वक भोज करनेका उपदेश -----	४०९
विधिपूर्वक भोजनसे लाभ -----	४११

द्रव्यशुद्धि और भावशुद्धिमें अन्तर -----	४१२
षष्ठ अध्याय	
सम्यक् तप आराधना-----	४१५
दश लक्षण धर्म -----	४१६
क्रोधको जीतनेका उपाय -----	४१७
उत्तम क्षमाका महत्त्व -----	४१७
क्षमा भावनाकी विधि -----	४१७
उत्तम मार्दव -----	४२०
अहंकारसे अनर्थ परम्परा -----	४२१
गर्व नहीं करना चाहिए -----	४२२
मानविजयका उपाय -----	४२३
मार्दव भावना आवश्यक-----	४२४
आर्जवधर्म -----	४२५
मायाचारकी निन्दा -----	४२६
आर्जव शीलोंनेकी दुर्लभता -----	४२७
माया दुर्गतिका कारण -----	४२८
शौचधर्म -----	४२८
लोभके आठ प्रकार -----	४२९
लोभीके गुणोंका नाश -----	४३०
लोभविजयके उपाय -----	४३०
शौचकी महिमा -----	४३१
लोभका माहात्म्य -----	४३१
क्रोधादिकी चार अवस्था -----	४३२
सत्यधर्म -----	४३५
सत्यव्रत, भाषासमिति और सत्यधर्ममें अन्तर -----	४३६
संयमके दो भेद -----	४३७
अपहृत संयमके भेद -----	४३७
मनको रोकनेका उपदेश -----	४३९
इन्द्रिय संयमके लिए मनका संयम -----	४४०
विषयोंकी निन्दा -----	४४४
मध्यम अपहृत संयम-----	४४५
प्राणिपीडा परिहाररूप अपहृत संयम -----	४४६
अपहृत संयमकी वृद्धिके लिए आठ शुद्धि -----	४४६
उपेक्षा संयमका लक्षण -----	४४८
उपेक्षा संयमकी सिद्धिके लिएतपकी प्रेरणा -----	४४९

त्यागधर्म -----	४५०
आकिंचन्य धर्मीकी प्रशंसा-----	४५१
ब्रह्मचर्य धर्म -----	४५२
अनित्य भावना -----	४५३
अशरण भावना -----	४५५
संसार भावना -----	४५६
एकत्व भावना -----	४५८
अन्यत्व भावना -----	४६०
अशुचित्य भावना -----	४६३
शरीरकी अशुचिता -----	४६३
आस्रव भावना -----	४६४
संवर भावना -----	४६६
निर्जरा भावना -----	४६७
आत्मध्यानकी प्रेरणा -----	४६८
लोक भावना -----	४६९
बोधि दुर्लभ भावना -----	४७१
उत्तम धर्मकी भावना -----	४७३
धर्मकी दुर्लभता -----	४७४
अनुप्रेक्षासे परममुक्ति -----	४७५
परीषह जय -----	४७६
परीषहका लक्षण -----	४७७
परीषह जयकी प्रशंसा -----	४७९
क्षुत्परीषह जय -----	४८०
तृषापरीषह जय-----	४८०
शीतपरीषह जय -----	४८१
उष्णपरीषहन सहन -----	४८१
दंशमसक सहन -----	४८१
नाग्न्यपरीषह जय -----	४८२
अरतिपरीषह जय -----	४८२
सक्त्रीपरीषह सहन -----	४८३
चर्यापरीषह सहन -----	४८३
निषद्या परीषह -----	४८४
शय्या परीषह -----	४८४
आक्रोश परीषह -----	४८५
वधपरीषह -----	४८५

याचना परीषह -----	४८५
अलाभ परीषह -----	४८६
रोग परीषह -----	४८६
तृणस्पर्श सहन -----	४८७
मलपरीषह सहन -----	४८७
सत्कार पुरस्कार परीषह -----	४८७
प्रज्ञा परीषह -----	४८८
अज्ञान परीषह -----	४८८
अदर्शन सहन -----	४८९
उपसर्ग सहन -----	४९०
सप्तम अध्याय	
तपकी व्युत्पत्ति -----	४९२
तपका लक्षण-----	४९२
तपके भेद -----	४९३
अनशनादि बाह्य क्यों -----	४९४
बाह्य तपका फल -----	४९५
रुचिकर आहारके दोष -----	४९६
अनशन तपके भेद -----	४९६
उपवासका लक्षण -----	४९७
अनशन आदिका लक्षण -----	४९८
उपवासके तीन भेद -----	४९८
उपवासके लक्षण-----	४९९
बिना शक्तिके भोजन त्यागनेमें दोष -----	४९९
अनशन तपमें रुचि उत्पन्न करते हैं -----	५००
आहार संज्ञाके निग्रहकी शिक्षा-----	५०१
अनशन तपकी भावना -----	५०१
अवमौदर्यका लक्षण -----	५०२
बहुत भोजनके दोष -----	५०३
मिताशनके लाभ-----	५०३
वृत्तिपिरिसंख्यात तपका लक्षण -----	५०४
रसपरित्यागका लक्षण -----	५०६
रसपरित्यागका पात्र -----	५०७
विविक्तशय्यासनका लक्षण-----	५०८
कायक्लेशका लक्षण -----	५०९
अभ्यन्तर तप -----	५११

प्रायश्चित्तका लक्षण -----	५११
प्रायश्चित्त क्यों किया जाता है -----	५११
प्रायश्चित्तकी निरुक्ति -----	५१२
आलोचना प्रायश्चित्त -----	५१३
आलोचनाका देशकाल -----	५१३
आलोचनाके दस दोष -----	५१४
आलोचनके बिना तप कार्यकारी नहीं -----	५१६
प्रतिक्रमणका लक्षण -----	५१७
तदुभयका लक्षण -----	५१७
विवेकका लक्षण -----	५१८
व्युत्सर्गका स्वरूप -----	५१८
तप प्रायश्चित्त -----	५१९
आलोचनादि प्रायश्चित्तोंका विषय -----	५१९
छेद प्रायश्चित्तका लक्षण -----	५२०
मूल प्रायश्चित्त का लक्षण -----	५२०
परिहार प्रायश्चित्त का लक्षण -----	५२१
श्रद्धान प्रायश्चित्त का लक्षण -----	५२३
अपराधके अनुसार प्रायश्चित्त -----	५२३
व्यवहार और निश्चयसे प्रायश्चित्तके भेद -----	५२४
विनय तपका लक्षण -----	५२४
वियनशब्दकी निरुक्ति -----	५२५
विनय रहितकी शिक्षा निष्फल -----	५२५
विनयके भेद -----	५२६
सम्यक्त्व विनय -----	५२६
दर्शन विनय और दर्शनाचारमें अन्तर -----	५२६
आठ प्रकारकी ज्ञानविनय -----	५२७
ज्ञानविनय और ज्ञानाचारमें भेद -----	५२८
चारित्र विनय -----	५२८
चारित्र विनय और चारित्राचारमें भेद -----	५२८
औपचारिक विनयके सात भेद -----	५२९
औपचारिक विनयके वाचिक भेद -----	५२९
मानसिक औपचारिकके भेद -----	५३०
तपोविनय -----	५३१
विनय भावनाका फल -----	५३१
वैयावृत्य तप -----	५३२

वैयावृत्य तपका फल -----	५३२
स्वाध्यायका निरुक्तिपूर्वक अर्थ -----	५३४
वाचनाका स्वरूप -----	५३५
पृच्छनाका स्वरूप -----	५३५
अनुप्रेक्षाका स्वरूप -----	५३६
आम्नाय और धर्मोपदेश -----	५३६
धर्मकथाके चार भेद -----	५३७
स्वाध्यायके लाक्ष -----	५३७
स्तुतिरूप स्वाध्ययका फल -----	५३८
पञ्च नमस्कारका जप उत्कृष्ट स्वाध्याय -----	५३९
व्युत्सर्गके दो भेद -----	५४१
निरुक्तिपूर्वक व्युत्सर्गका अर्थ -----	५४१
उत्कृष्ट व्युत्सर्गका स्वामी -----	५४२
अन्तरंग व्युत्सर्गका स्वरूप -----	५४२
नियतकाल कायत्यागके भेद -----	५४२
प्राणान्त कायत्यागके तीन भेद -----	५४३
कान्दर्पी आदि दुर्भावना -----	५४६
संकलेशरहित भावना -----	५४७
भक्त प्रत्याख्यानका लक्षण -----	५४८
व्युत्सर्ग तपका फल -----	५४८
चार ध्यान -----	५४९
तप आराधना -----	५५०
अष्टम अध्याय	
षडावश्यकका कथन -----	५५१
ज्ञानीका विषयोपभोग -----	५५३
ज्ञानी और अज्ञानीके कर्मबन्धमें अन्तर -----	५५४
आत्माके अनादि प्रमादाचरणपर शोक -----	५५६
व्यवहारसे ही आत्मा कर्ता -----	५५७
रागादिसे आत्मा भिन्न है -----	५५९
आत्मा सम्यग्दर्शन रूप -----	५६०
आत्माकी ज्ञानरति -----	५६१
बेदज्ञानसे ही मोक्षलाभ -----	५६२
शुद्धात्माके ज्ञानकी प्राप्ति होने तक क्रियाका पालन -----	५६३
आवश्यक विधिका फल पुण्यास्रव -----	५६४
पुण्यसे दुर्गतिसे रक्षा-----	५६५

निरुक्तिपूर्वक आवश्यकका लक्षण -----	५६६
आवश्यकके भेद -----	५६७
सामायिकका निरुक्तिपूर्वक लक्षण -----	५६८
भाव सामायिकका लक्षण -----	५७०
नाम सामायिकका लक्षण -----	५७१
स्थापना सामायिकका लक्षण -----	५७१
द्रव्य सामायिकका लक्षण -----	५७२
क्षेत्र सामायिकका लक्षण -----	५७३
भावसामायिकका विस्तार -----	५७४
भावसामायिक अवश्य करणीय -----	५७७
सामायिकका माहात्म्य-----	५७८
चतुर्विंशतिस्तवका लक्षण-----	५७९
नामस्तवका स्वरूप -----	५८१
स्थापनास्तवका स्वरूप -----	५८३
द्रव्यस्तवका स्वरूप -----	५८३
क्षेत्रस्तवका स्वरूप -----	५८६
कालस्तवका स्वरूप -----	५८६
भावस्तवका स्वरूप -----	५८७
व्यवहार और निश्चयस्तवके फलमें भेद -----	५८८
वन्दनका लक्षण -----	५८८
विनयका स्वरूप और भेद -----	५८९
वन्दनाके छह भेद -----	५९०
श्रावक और मुनियोंके लिए अवन्दनीय -----	५९१
वन्दनाकी विधि, काल -----	५९२
पारस्परिक वन्दनका निर्णय -----	५९३
सामायिक आदि करनेकी विधि -----	५९३
प्रतिक्रमणके भेद -----	५९४
अन्य भेदोंका अन्तर्भाव -----	५९५
प्रतिकर्मणके कर्ता आदि कारक -----	५९७
प्रतिक्रमणकी विधि -----	५९८
नीचेकी भूमिकामें प्रतिक्रमण करनेपर उपकार न करनेपर अपकार -----	६००
समस्त कर्म और कर्मफल त्यागकी भावना -----	६०१
प्रत्याख्यानका कथन -----	६०६
प्रत्याख्येय और प्रत्याख्याता -----	६०८
प्रत्याख्यानके दस भेद -----	६०९

प्रत्याख्यान विनययुक्त होना चाहिए -----	६०९
कायोत्सर्गका लक्षण आदि -----	६१०
कायोत्सर्गके छह भेद -----	६११
कायोत्सर्गका जघन्य आदि परिमाण -----	६१२
दैनिक आदि प्रतिक्रमण तथा कायोत्सरहर्गोंमें उच्छ्वासोंकी संख्या-----	६१३-६१४
दिन-रातमें कायोत्सर्गोंकी संख्या -----	६१५
नित्य-नैमित्तिक क्रियाकाण्डसे परम्परा मोक्ष-----	६१६
कृतिकर्म करनेकी प्रेरणा -----	६१७
नित्य देववन्दनामें तीनों कालोंका परिमाण -----	६१८
कृतिकर्म योग्य आसन -----	६१८
वन्दनाके योग्य देश -----	६१९
कृतिकर्मके योग्य पीठ -----	६२०
वन्दनाके योग्य तीन आसन -----	६२०
आसनोंका स्वरूप -----	६२०
वन्दनाका स्थान विशेष -----	६२२
जिनमुद्रा और योगमुद्राका लक्षण -----	६२२
वन्दनामुद्रा और मुक्ताशुक्ति मुद्राका स्वरूप -----	६२२
मुद्राओंका प्रयोग कब -----	६२३
आवर्तका स्वरूप -----	६२३
हस्त परावर्तनरूप आवर्त -----	६२५
शिरोनतिका लक्षण -----	६२५
चैत्यभक्ति आदिमें आवर्त और शिरोनति -----	६२६
स्वमत और परमतसे शिरोनतिका निर्णय -----	६२७
प्रमाणके भेद -----	६२८
कृतिकर्मके प्रयोगकी विधि -----	६२९
वन्दनाके बत्तीस दोष -----	६३०
कायोत्सर्गके बत्तीस दोष -----	६३३
कायोत्सर्गके चार भेद और उनका इष्ट-अनिष्ट फल -----	६३५
शरीरसे ममत्व त्यागे बिना इष्टसिद्धि नहीं -----	६३७
कृतिकर्मके अधिकारीका लक्षण -----	६३७
कृतिकर्मकी क्रमविधि -----	६३८
सम्यक् रीतिसे छह आवश्यक करनेवालोंके चिह्न -----	६३९
षडावश्यक क्रियाकी तरह साधुकी नित्य क्रिया भी विधेय -----	६४०
भावपूर्वक अर्हन्त आदि नमस्कारका फल -----	६४०
निःसही और असहीके प्रयोगकी विधि-----	६४०

परमार्थसे निःसही और असही -----	६४१
नवम अध्याय	
स्वाध्यायके प्रारम्भ और समापनकी विधि -----	६४२
स्वाध्यायके प्रारम्भ और समाप्तिका कालप्रमाण -----	६४३
स्वाध्यायका लक्षण और फल -----	६४३
विनयपूर्वक श्रुताध्ययनका माहात्म्य -----	६४५
जिनशासनमें ही सच्चा ज्ञान -----	६४५
साधुको रात्रिके पिछले भागमें अवश्य करणीय -----	६४६
परमागमके व्याख्यानादिमें उपयोग लगानेका माहात्म्य -----	६४७
प्रतिक्रमणका माहात्म्य -----	६४८
प्रतिक्रमण तथा रात्रियोग स्थापन और समान विधि -----	६४८
प्रातःकालीन देववन्दनाके लिए प्रोत्साहन -----	६४९
त्रैकालिक देववन्दनाकी विधि -----	६५०
कृतिकर्मके छह भेद -----	६५१
जिनचैत्य वन्दनाके चार फल -----	६५२
कृतिकर्मके प्रथम अंग स्वाधीनताका समर्थन -----	६५३
देववन्दना आदि क्रियाओंके करनेका क्रम -----	६५३
कायोत्सर्गमें ध्यानकी विधि -----	६५४
वाचिक और मानसिक जपके फलमें अन्तर -----	६५६
पंचनमस्कारका माहात्म्य -----	६५६
एक-एक परमेष्ठीकी भी विनयाक अलौकिक माहात्म्य-----	६५७
कायोत्सर्गके अनन्तर कृत्य -----	६५८
आत्मध्यानके बिना मोक्ष नहीं -----	६५८
समाधिकी महिमा कहना अशक्य -----	६५९
देववन्दनाके पश्चात् आचार्य आदिकी वन्दना -----	६५९
धर्माचार्यकी उपासनाका माहात्म्य -----	६६०
ज्येष्ठ साधुओंकी वन्दनका माहात्म्य -----	६६०
प्रातःकालीन कृत्यके बादकी क्रिया -----	६६०
अस्वाध्याय कालमें मुनिका कर्तव्य -----	६६१
मध्याह्न कालका कर्तव्य -----	६६१
प्रत्याख्यान आदि ग्रहण करनेकी विधि -----	६६१
भोजनके अनन्तर ही प्रत्याख्यान ग्रहण न करनेपर दोष -----	६६२
भोजनसम्बन्धी प्रतिक्रमण आदिकी विधि -----	६६२
दैवसिक प्रतिक्रमण विधि -----	६६३
आचार्यवुन्दनाके पश्चात् देववन्दनाकी विधि-----	६६३

रात्रिमें निद्रा जीतनेके उपाय -----	६६३
जो स्वाध्याय करनेमें असमर्थ है उसके लिए देववन्दनाका विधान -----	६६४
चतुर्दशकीए दिनकी क्रिया -----	६६५
उक्त क्रियामें भूल होनेपर उपाय -----	६६६
अष्टमी और पक्षान्तकी क्रियाविधि -----	६६६
सिद्ध प्रतिमा आदिकी वन्दनाकी विधि -----	६६७
अपूर्व चैत्यदर्शन होनेपर क्रिया प्रयोगविधि -----	६६७
क्रियाविषयक तिथिनिर्णय -----	६६८
प्रतिक्रमण प्रयोग विधि -----	६६८
श्रुतपंचमीके दिनकी क्रिया -----	६७२
सिद्धान्त आदि वाचना सम्बन्धी क्रियाविधि -----	६७३
संन्यासमरणकी विधि -----	६७४
आष्टाह्निक क्रियाविधि -----	६७५
अभिषेक वन्दना क्रिया -----	६७५
मंगलोचर क्रियाविधि -----	६७५
वर्षायोग ग्रहण और त्यागकी विधि -----	६७५
वीर निर्वाणकी क्रियाविधि -----	६७६
पंचकल्याणके दिनोंकी क्रियाविधि-----	६७७
मृत ऋषि आदिके शरीरकी क्रियाविधि -----	६७७
जिनबिम्ब प्रतिष्ठाके समयकी क्रियाविधि -----	६७८
आचार्यपद प्रतिष्ठापनकी क्रियाविधि -----	६७९
आचार्यके छत्तीस गुण -----	६७९
आचारवत्त्व आदि आठ गुण -----	६८१
उनका स्वरूप -----	६८१
दस स्थितिकल्प -----	६८४
प्रतिमायोगसे स्थित मुनिकी क्रियाविधि -----	६९०
दीक्षाग्रहण और केशलौचकी विधि -----	६९१
दीक्षादानके बादकी क्रिया-----	६९१
केशलौचका काल -----	६९२
बाईस तीर्थकरोंने सामायिकका भेदपूर्वक कथन नहीं किया -----	६९३
जिनलिंग धारणके योग्य कौन -----	६९३
केवल लिंगधारण निष्फल -----	६९५
लिंग सहित व्रतसे कषायविशुद्धि -----	६९५
भूमिशयनका विधान -----	६९६
खड़े होकर भोजन करनेकी विधि और काल -----	६९६

खडे होकर भोजन करनेका कारण -----	६९८
एकभक्त और एकस्थानमें भेद -----	६९९
केशलोचका लक्षण और फल -----	७००
स्थान न करनेका समर्थन -----	७००
यतिधर्म पालनका फल -----	७०२